Received: Jan '25
Revised:
Accepted: Feb '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

THE DEVELOPMENT JOURNEY OF INDIAN DEMOCRACY - CHALLENGES AND SOLUTIONS
भारतीय लोकतंत्र की विकास यात्रा – चुनौतियाँ एवं समाधान

Dr. Siddharth Rao[1] and Dr. Bhawana[2]
[1]AssistantProfessor, Department of Political Science, Govt. N.M. College, Hanumangarh, Rajasthan, India
[2]Assistant Professor, Department of History, Govt. N.M. College, Hanumangarh, Rajasthan, India
E-mail: [1]siddharthrao775@gmail.com, [2]bhawanabeni@gmail.com

ABSTRACT

Democracy means "government by the people." India is the universal democracy of the world where democracy has been working for the last 75 years. A democracy is a form of government in which the people are elected by the people. The Indian democratic government is expansive. The beginning of the democratic system in India is considered to be from our Republic Day i.e. 26th January, 1950 when our Constitution came into force. A democratic government is based on the principles of liberty, equality and fraternity. Elections were held on the basis of universal adult franchise, but democracy in modern India faces many challenges - illiteracy, ignorance, unemployment, casteism, communalism, regionalism, overpopulation. This paper attempts to study these problems and the reforms required to make the democratic system strong and fair.

लोकतंत्र का तात्पर्य "जनता द्वारा शासन" अर्थात् व्यक्तियों को अपनी सरकार के कार्यों पर शासकीय नियंत्रण का अधिकार प्रदान करता है। भारत विश्व का सर्वव्यापक लोकतंत्र है जहां पिछले 75 वर्षों से लोकतंत्र कार्य कर रहा है। लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें शासकों का चयन आम जनता करती हैं। भारतीय लोकतांत्रिक सरकार विस्तृत है। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की शुरुआत हमारे गणतंत्र दिवस अर्थात 26 जनवरी, 1950 को जब हमारा संविधान लागू हुआ तब से मानी जाती है। प्रजातांत्रिक सरकार स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व के सिद्धान्तों पर आधारित है। सार्वजनिक वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव आयोजित किये गए लेकिन आधुनिक भारत में लोकतंत्र को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है– अशिक्षा, अज्ञानता, बेकारी, जातिवाद, सामुद ायिकता, क्षेत्रवाद, जनसंख्या की अधिकता। इस शोध पत्र में इन्हीं समस्याओं और लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त और निष्पक्ष बनाने हेतु आवश्यक सुधारों की ओर अध्ययन करने का प्रयास है।

Keywords: लोकतंत्र, समस्या, संविधान, सुधार, क्षेत्रवाद, समानता, भारत, दुनिया, सरकार

प्रस्तावना

लोकतंत्र का इतिहास काफी लम्बा और उतार–चढ़ाव वाला रहा है। मानवीय गतिविधियाँ जैसे–जैसे व्यापक रूप लेती गयी तो मानव के दृष्टिकोण भी व्यापक होते गए। एक नागरिक समाज निर्माण करने की आकांक्षा ने मानव समुदाय को लोकतंत्र की ओर अग्रसर होने हेतु प्रेरित किया। इसका मौलिक कारण यह है कि लोकतंत्र में ही समस्त नागरिकों की अधिकतम भागीदारी का अवसर मिलता है। साथ ही जनता निर्णय प्रक्रिया के साथ ही कार्यकारी क्षेत्र में भी भाग लेती है। अपने विकास क्रम के विभिन्न चरणों में लोकतंत्र ने भिन्न–भिन्न परिस्थितियों को सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

प्राचीन काल में भारत में सुदृढ़ व्यवस्था विद्यमान थी इसके प्रमाण हमें पुरातन साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों से मिलते हैं। इन साक्ष्यों के अनुसार वर्तमान संसद की भांति सुदृढ़ व्यवस्था विद्यमान थी इसके प्रमाण हमें पुरातन साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों से मिलते है। इन साक्ष्यों के अनुसार वर्तमान संसद की भांति प्राचीन समय में परिषदों का गठन हुआ करता था जो हमारी संसदीय व्यवस्था से मेल खाता है। इन्हीं परिषदों के द्वारा गणराज्य या संघ की नीतियों का संचालन होता था, दूसरे शब्दों में प्राचीन काल से ही हमारे देश में गौरवशाली लोकतंत्रीय परम्परा थी साथ ही सुव्यवस्थित शासन संचालन के लिए अनेक मंत्रालयों का निर्माण भी किया गया था।

भारत, इंग्लैण्ड के उपनिवेश से 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हुआ था और अपना स्वयं का संविधान निर्मित कर उसे 26 जनवरी, 1950 को आत्मसात किया, जिसके अनुसार भारत देश एक लोकतांत्रिक, सम्प्रभु तथा गणतंत्रात्मक राष्ट्र घोषित हुआ। 26 जनवरी, 1950 को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित कर दिया जो कि भारत के लिए ऐतिहासिक क्षण बन गया। हमारा संविधान भारत के नागरिकों को लोकतांत्रिक तरीके से स्वयं अपनी सरकार के चयन का अधिकार देता हे।

विश्व के विभिन्न देशों में राजतंत्र, श्रेणीतंत्र, अधिनायकतंत्र व लोकतंत्र आदि शासन प्रणालियाँ सदियों से चली आ रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करने पर यह साक्ष्य उजागर

होता है कि भारतीय समाज में लोकतंत्रात्मक प्रणाली का आरम्भ पूर्व वैदिक काल से ही हो गया था अर्थात् प्राचीन काल में भारत में सुदृढ़ लोकतांत्रिक व्यवस्था विद्यमान थी।

भारत अपनी सर्वाधिक प्राचीन सभ्यताओं से सराबोर है। विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है जिसमें विभिन्नता, बहुरंगी विविधता, समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर है साथ ही एक प्रमुख गुण लिए हुए है वह है बदलते परिवेश में स्वयं को ढालना। इस प्रकार भारत में लोकतांत्रिक परम्पराएँ विभिन्न रूपों में प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है।

इतिहास

- प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं का अस्तित्व था। महाजनपदों में गणराज्यों का महत्त्व था जहाँ समस्त प्रजा को निर्णय लेने का अधिकार था, राजा और प्रजा में संवाद होता था। जनता के कल्याण के प्रति राजा कर्त्तव्यनिष्ठ होता था। राजा की शक्ति को सीमित करने हेतु जनमत को महत्त्व दिया जाता था।
- मध्यकाल में भारत में मुस्लिम साम्राज्यों का प्रभुत्व था इससे लोकतांत्रिक विचारों का अस्तित्व कम हुआ लेकिन फिर भी कुछ क्षेत्रीय शासकों ने प्रशासन में जनभागीदारी की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।
- आधुनिक भारत में लोकतांत्रिक विचारों का प्रवेश ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन ने लोकतंत्र की आवश्यकता को उजागर किया।
- भारतीय संविधान ने स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र को भारत में संस्थागत रूप से स्थापित किया।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत ने बहुआयामी सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में विकास किया है। इसकी भौगोलिक पहचान ने ही भारत को एशिया में विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत के संविधान में लोकतंत्र को प्रमुख स्थान देकर देश को एक लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करना, भारतीय संविधान में ब्रिटिश संसद के अधिनियमों को नष्ट कर दिया तथा कुछ मुख्य तथ्यों को आत्मसात किया गया जैसे–

- भारत को सम्प्रभु, समाजवादी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया है।
- समस्त भारतीय नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता की गारन्टी सुनिश्चित की गयी है।
- भारत में लोकतंत्र की स्थापना के बाद नागरिकों को मताधिकार तथा स्वयं अपने नेताओं को चयन करने का अधिकार दिया गया।

भारत विश्व का सबसे वृहत्त लोकतंत्र है और राजनीतिक सहभागिता के सफल क्रियान्वयन हेतु एक निष्पक्ष चुनाव आवश्यक है। भारत में चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा प्रयोग है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद–324 स्वयं चुनाव आयोग की व्यवस्था कर लोकतंत्र प्रणाली के कुशलतापूर्वक कार्य करने की व्यवस्था करता है। भारत में चुनाव एक उत्सव की तरह है, विश्व में भारत के लोकतंत्र की वैश्विक प्रतिष्ठा भी बनी हुई है।

भारत में लोकतंत्र

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसका लोकतांत्रिक स्वरूप 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ प्रारम्भ हुआ। लोकतंत्र का मूल आधार है "जनता का, जनता के द्वारा, और जनता के लिए शासन"। भारत ने 26 जनवरी, 1950 को अपना संविधान लागू किया जो इसे एक सम्पूर्ण प्रभुत्व–सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में परिभाषित करता है। लोकतांत्रिक भारत से तात्पर्य है कि चुनाव के माध्यम से प्रतिनिधियों को चुनने के लिए, भारत के प्रत्येक नागरिक को बिना किसी पंथ, जाति, धर्म, क्षेत्र और लिंग के भेदभाव के वोट देने का अधिकार है। जिन सिद्धान्तों पर भारत की लोकतांत्रिक सरकार आधारित है वे हैं स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय। भारत में सरकार का संघीय स्वरूप है अर्थात् केन्द्र और राज्य क्रमशः लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार और संसद के दो सदनों–राज्यसभा और लोकसभा का अनुसरण करते हैं। भारत में पहली बार हुए चुनाव को दुनिया के लोकतंत्र में सबसे बड़े प्रयोगों में से एक माना गया। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव आयोजित किए गए चूंकि यह भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली की शुरुआत थी इसलिए चुनाव की प्रक्रिया नागरिकों के साथ–साथ इसे संचालित करने वालों के लिए भी नहीं थी। चुनाव प्रक्रिया लगभग चार महीने तक चली जो 25 अक्टूबर, 1951 से 21 फरवरी, 1952 तक थी। चुनाव में 14 राष्ट्रीय दलों के साथ–साथ क्षेत्रीय दलों (63) ने भाग लिया और कई उम्मीदवार स्वतंत्र थे। बहुमत प्राप्त करके राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने भारत में पहली बार चुनाव जीता।

भारत में लोकतंत्र एक जीवंत और सशक्त प्रणाली है जिसने देश को अनेक चुनौतियों के बावजूद एकजुट रखा है। यह शासन प्रणाली न केवल जनता को अपनी सरकार चुनने का अधिकार देती है बल्कि उन्हें जवाबदेह भी बनाती है। हालांकि लोकतंत्र को ओर मजबूत बनाने के लिए शिक्षा, सामाजिक समानता और पारदर्शिता को बढ़ावा देना आवश्यक है। भारत का लोकतंत्र, अपने विशाल आकार और विविधता के बावजूद, विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

सामूहिक जिम्मेदारी

भारत में लोकतांत्रिक सरकार में केन्द्र और राज्य दोनों ही सरकारें, मंत्रिपरिषद् और अपने–अपने विधानमंडल सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त पर कार्य करते हैं।

बहुमत नियम

देश के प्रत्येक नागरिक को उस सरकार का समर्थन और स्वीकार करना चाहिए जिसे नागरिकों से बहुमत प्राप्त हुआ हो।

अल्पसंख्यकों का सम्मान

भारतीय लोकतंत्र में बहुमत के नियम हैं लेकिन अल्पसंख्यकों की राय भी जानी जाती है।

अधिकारों के प्रावधान

इन अधिकारों में शिक्षा का अधिकार, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संघ बनाने का अधिकार आदि शामिल हैं।

स्वतंत्र न्यायपालिका

स्वतंत्र न्यायपालिका लोकतांत्रिक सरकार की एक ओर विशेषता है। स्वतंत्र न्यायपालिका का मतलब है कि लोकतांत्रिक सरकार में न्यायपालिका को विधायिका या कार्यपालिका पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है।

राजनीतिक समानता

भारतीय लोकतंत्र राजनीतिक समानता पर आधारित है जिसका अर्थ है कि भारत का प्रत्येक नागरिक कानून के समक्ष समान है और उसे वर्ग, पंथ, जाति, नस्ल, लिंग और धर्म के बावजूद मतदान का अधिकार है।

भारत में लोकतंत्र के सम्मुख समस्याएँ

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार भारतीय लोकतंत्र की एक गंभीर चुनौती है जो शासन प्रणाली की पारदर्शिता और जवाबदेही को कमजोर करता है। यह समस्या न केवल आर्थिक विकास में बाधा डालती है बल्कि नागरिकों का प्रशासन और सरकार पर से विश्वास भी कम करती है।

भ्रष्टाचार न केवल ईमानदारी और पारदर्शिता की कमी से लोकतांत्रिक सिद्धांत कमजोर होते हैं बल्कि भ्रष्टाचार के कारण विकास के संसाधन गरीबों तक नहीं पहुँचते। इसके साथ–साथ भ्रष्टाचार सार्वजनिक धन का दुरुपयोग और घोटाले आर्थिक प्रगति को बाधित करते हैं एवं भ्रष्टाचार के कारण नीतियाँ जनहित के बजाय व्यक्तिगत लाभ के लिए बनाई जाती हैं।

भ्रष्टाचार को समाप्त किए बिना लोकतंत्र को सशक्त बनाना कठिन है। इसके उन्मूलन के लिए सरकार, नागरिकों और संस्थानों का सहयोग आवश्यक है।

जातिवाद

जातिवाद भारत में लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती है। यह न केवल समाज को विभाजित करता है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे समानता, न्याय और एकता को कमजोर करता है। जातिवाद का आधार जाति–व्यवस्था है जो समाज में जन्म के आधार पर वर्गीकरण करती है हालाँकि भारतीय संविधान जाति आधारित भेदभाव को समाप्त करने की गारंटी देता है, लेकिन सामाजिक और राजनीतिक जीवन में जातिवाद की गहरी जड़ें अभी भी मौजूद हैं।

जातिवाद समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटता है, जिससे एकता और भाईचारे की भावना कमजोर होती है। जाति आधारित राजनीति अक्सर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती है। कई नेता और राजनीतिक दल जातीय समीकरणों का इस्तेमाल वोट बैंक के लिए करते हैं। जातिवाद के कारण समाज के कई वर्गों को समान अवसर नहीं मिलते, जिससे आर्थिक और सामाजिक विकास बाधित होता है। जातीय भेदभाव और संघर्ष के कारण समाज में हिंसा और अस्थिरता का माहौल बनता है। जातिवाद लोकतंत्र की सबसे बड़ी समस्या है जो कि समाज में हिंसा, वैमनस्य, असमानता को उत्पन्न करती है। साथ ही असंतोष और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। तनाव व विद्वेष बढ़ता है, आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है। अतः जातिवाद लोकतंत्र की एक जटिल समस्या है।

क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद भारतीय लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें लोग अपने क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय हितों से ऊपर रखते हैं। क्षेत्रवाद का सीधा प्रभाव देश की एकता और अखंडता पर पड़ता है। हालाँकि भारत का संविधान विविधता में एकता के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन क्षेत्रवाद इस एकता को कमजोर करता है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है।

क्षेत्रवाद वह विचारधारा है जिसमें किसी विशेष क्षेत्र के लोग अपने क्षेत्रीय पहचान, संस्कृति, भाषा और आर्थिक हितों को प्राथमिकता देते हैं और कभी–कभी इसके लिए राष्ट्रीय हितों को दरकिनार कर देते हैं। यह समस्या तब ओर गहरी हो जाती है जब क्षेत्रीय भावना अलगाववाद या हिंसा का रूप ले लेती है।

विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के बीच आर्थिक विकास में असमानता क्षेत्रवाद को बढ़ावा देती है। पिछड़े क्षेत्रों के लोग महसूस करते हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। एक क्षेत्र की भाषा को अन्य पर थोपने की कोशिश से क्षेत्रीय असंतोष पैदा होता है। क्षेत्रीय लोग अपनी संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिलता है। क्षेत्रीय दल और नेता क्षेत्रीय असंतोष को भुनाकर राजनीतिक लाभ उठाते हैं। कुछ क्षेत्रों में खनिज, पानी, और अन्य संसाधनों की प्रचुरता होती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में कमी। यह क्षेत्रीय संघर्ष को जन्म देता है। कुछ क्षेत्रीय आंदोलन अलगाववाद की मांग करते हैं जैसे कश्मीर समस्या और पूर्वोत्तर भारत में अलगाववादी आंदोलन। क्षेत्रीय संघर्ष के कारण विकास योजनाएँ प्रभावित होती हैं। हिंसा और विरोध प्रदर्शनों से विकास की गति धीमी हो जाती है। क्षेत्रीय दल कभी–कभी केंद्र सरकार के खिलाफ खड़े हो जाते हैं, जिससे राजनीतिक अस्थिरता पैदा होती है। क्षेत्रवाद के कारण समाज में विभाजन बढ़ता है, जो सामाजिक तनाव का कारण बनता है।

क्षेत्रवाद भारतीय लोकतंत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे सही ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है। इसके लिए सरकार, राजनीतिक दलों और नागरिकों को मिलकर प्रयास करना होगा। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन बनाकर ही भारत अपनी विविधता में एकता बनाए रख सकता है। यदि क्षेत्रवाद को सकारात्मक दिशा दी जाए तो यह राष्ट्रीय विकास में सहायक हो सकता है।

बेरोजगारी

बेरोजगारी भारत में लोकतंत्र के सामने एक प्रमुख चुनौती है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें योग्य और इच्छुक लोग काम पाने में असमर्थ होते हैं। बेरोजगारी न केवल आर्थिक समस्या है बल्कि यह सामाजिक असंतोष, गरीबी और लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास का कारण भी बनती है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ जनसंख्या वृद्धि तेज़ है, बेरोजगारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया और सामाजिक स्थिरता के लिए गंभीर समस्या बन गई है।

बेरोजगारी के कारण समाज में असमानता, अपराध और अशांति बढ़ती है। बेरोजगारी के कारण मानव संसाधन का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता, जिससे देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है। बेरोजगारी युवाओं में असंतोष बढ़ाती है, जिससे आंदोलन और विरोध प्रदर्शन की संभावना बढ़ जाती है। जब लोग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते तो वे लोकतांत्रिक व्यवस्था पर विश्वास खो देते हैं। रोजगार की कमी के कारण लोग क्षेत्रीय और जातिगत पहचान के आधार पर एकजुट होते हैं जिससे समाज में विभाजन बढ़ता है।

निर्धनता

निर्धनता (गरीबी) भारत में लोकतंत्र के सामने एक प्रमुख चुनौती है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को पूरा करने में असमर्थ होता है। लोकतंत्र में सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए लेकिन निर्धनता लोकतांत्रिक सिद्धांतों को कमजोर करती है। यह समस्या केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक और राजनीतिक असमानता को भी जन्म देती है।

निर्धनता का अर्थ है जीवन यापन के लिए न्यूनतम आय और संसाधनों की कमी। भारत में गरीबी को आय आधारित गरीबी रेखा (चवअमतजल सपदम) के आधार पर मापा जाता है। जिनकी आय या खर्च इस रेखा से नीचे होती है, उन्हें निर्धन माना जाता है।

गरीब लोग अपने अधिकारों का उपयोग पूरी तरह नहीं कर पाते जैसे मतदान, शिक्षा और स्वास्थ्य। निर्धनता समाज में असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देती है। निर्धनता के कारण गरीब लोग आसानी से वोट बैंक के रूप में उपयोग किए जाते हैं। निर्धनता के कारण मानव संसाधन का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता जिससे देश की प्रगति रुक जाती है। गरीबी अपराध, हिंसा और सामाजिक अस्थिरता को जन्म देती है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया बाधित होती है।

निर्धनता भारत के लोकतंत्र की स्थिरता और विकास के लिए एक बड़ी बाधा है। इसे समाप्त करने के लिए सरकार, समाज और नागरिकों को मिलकर प्रयास करना होगा। शिक्षा, रोजगार, और समावेशी विकास को बढ़ावा देकर ही निर्धनता पर काबू पाया जा सकता है। जब निर्धनता समाप्त होगी तभी लोकतंत्र अपने सच्चे रूप में सफल हो सकेगा।

अशिक्षा

अशिक्षा भारत में लोकतंत्र के सामने एक बड़ी चुनौती है। यह न केवल समाज के विकास को बाधित करती है बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और अधिकारों को समझने और उनका सही उपयोग करने में भी बाधा डालती है। एक शिक्षित समाज ही लोकतंत्र को सफल बना सकता है लेकिन भारत में अशिक्षा की समस्या अभी भी व्यापक रूप से विद्यमान है।

अशिक्षा का अर्थ है किसी व्यक्ति का लिखने, पढ़ने और बुनियादी गणितीय कार्यों को करने में असमर्थ होना। यह समस्या केवल शैक्षिक ज्ञान की कमी नहीं है, बल्कि इससे व्यक्ति अपने अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समझने में भी असमर्थ रहता है।

अशिक्षित व्यक्ति अपने मतदान के अधिकार और अन्य लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सही तरीके से नहीं समझ पाता। अशिक्षा के कारण लोग भ्रष्टाचार और अनुचित नीतियों के शिकार बनते हैं। अशिक्षित समाज अपनी आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान विकसित नहीं कर पाता। अशिक्षा सामाजिक असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देती है जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है। अशिक्षित लोग राजनीतिक दलों और नेताओं द्वारा गुमराह किए जा सकते हैं जिससे लोकतंत्र का वास्तविक उद्देश्य प्रभावित होता है।

अशिक्षा भारतीय लोकतंत्र के लिए एक बड़ी बाधा है। इसे समाप्त करने के लिए सरकार, समाज और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। शिक्षा केवल अधिकार नहीं, बल्कि एक ऐसा साधन है जो समाज में समानता, जागरूकता और प्रगति लाने में मदद करता है। जब भारत पूर्ण रूप से साक्षर बनेगा तभी लोकतंत्र अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा कर पाएगा।

सुधार के क्षेत्र

- कानूनी सख्ती और निष्पक्षता बढ़ायी जाए, सरकारी योजनाएं आम जनता की पहुंच तक हो अर्थात् सरकारी निर्णयों और योजनाओं में पारदर्शिता लायी जाए, लोकपाल और लोक आयुक्त को सशक्त किया जाए।
- शिक्षा की पहुंच बढ़ाना, स्कूलों व शैक्षिक संस्थानों की बढ़ोतरी, जन जागरूकता अभियान के द्वारा शिक्षा के प्रति जागरूक करना, महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया

जाए। तकनीकी शिक्षा व कौशल शिक्षा दी जाए ताकि युवा रोजगार योग्य बन सके।

निर्धनता की समस्या के हल हेतु ये उपाय कारगार हो सकते हैं शिक्षा का विस्तार और सुधार क्योंकि शिक्षा से ही लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। सरकारी योजनाओं और नीतियों के माध्यम से छोटे और मध्यम उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए। सामाजिक सुरक्षा योजनाएं जैसे पेंशन, बीमा, स्वास्थ्य सेवाएं आदि का निर्माण किया जाए। सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से हो। कृषि क्षेत्र में सुधार एवं नई तकनीकी का प्रयोग किया जाए, कर्ज माफी और वित्तीय सहायता द्वारा भी स्वरोजगार को कुछ हद तक सुधारा जा सकता है। साथ ही स्थिर व सुदृढ़ राजनीतिक नेतृत्व भी निर्धनता उन्मूलन हेतु प्रतिबद्ध है।

अपने 71 वर्षों के सफर में भारत का लोकतंत्र कहां तक सफल रहा इसमें कोई दो मत नहीं है क्योंकि भारतीय लोकतंत्र का आधार बहुलतावाद और राष्ट्रीयता होने के कारण प्रगति की ओर उन्मुख है। दक्षिण एशिया के अन्य देशों में अनेक विशिष्ठ धार्मिक समुदायों का दबदबा है लेकिन भारत जो कि धर्म निरपेक्ष होने के कारण यह भारत का सशक्त पक्ष है। आज देशवासियों का जीवन स्तर पहले से काफी उच्च है। एक समाज में सभी धर्मों, वर्गों, जातियों के लोग एक साथ रहते हैं तथा कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, अन्तरिक्ष जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है।

दूसरी ओर वर्तमान स्थिति यह है कि भारत की अधिकांश आबादी स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, स्वच्छता से वंचित है, लैंगिक भेदभाव की समस्या भी व्यापक है। लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ मीडिया की स्वतंत्रता भी सवालों के घेरे में है। विभिन्न समस्याओं क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता भी लोकतंत्र की सफलता में बाधक है।

अतः सार यह है कि लोकतंत्र की सफलता हेतु सरकार जनआकांक्षाओं को ध्यान में रखे। सरकार के तीनों अंग व्यवस्थित, सुचारू रूप से कार्यों का निष्पादन करें। जनता को मतदान का प्रयोग कर्त्तव्य के रूप में करने हेतु प्रोत्साहित करे।

निष्कर्ष

लोकतंत्र को विश्व की सबसे अच्छे शासन प्रणाली के रूप में जाना जाता है यही कारण है कि हमारे देश के संविधान निर्माताओं और नेताओं ने शासन प्रणाली के रूप में लोकतांत्रिक व्यवस्था का चयन किया।

भारत में लोकतंत्र की समस्याओं का समाधान केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति, मजबूत संस्थाएं और नागरिकों की जागरूकता से सम्भव है। लोकतांत्रिक संस्थाओं का संरक्षण और सुधार, साथ ही समाज में समानता, न्याय और बन्धुत्व को बढ़ावा देना भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ बना सकता है।

संदर्भ

1. श्रीनिवासन, जानकी (2011) "लोकतन्त्र", (संपादक राजीय भार्गाव और अशोक आचार्य, पुस्तक राजनीति सिद्धांत एक परिचय) नई दिल्ली पीयर्सन, पृ. 108–132
2. जोशी रामशरण (2017) "इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां और लोकतंत्र की वैचारिकी", दिल्लीः अनामिका
3. बिस्वाल, तपन (2017) "भारतीय राजव्यवस्था और शासन", नई दिल्लीः ओरियंट ब्लैकस्वॉन, पृ. 291–292
4. गाबा, ओम प्रकाश (2016) "राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा", नई दिल्लीः मयूर पेपरबैक्स, पृ. 237
5. शर्मा, सुशील कुमार "भारत में लोकतंत्र, उद्देश्य एंव उपलब्धियां", WEBDUNIA हिंदी, available at https://hindi-webdunia-com/ current-affairs/bharat-mein-loktantra-hindi-117041100049 accessed on 08/De/2021 1-html
6. Manisha, M. (2009): "Introduction (Democratic Politics in India: Concepts, Challenges and Debates", Edit. By Sharmila Mitra Deb and M. Manisha in book "Indian Democracy: Problem and Prospects", London: Anthem Press
7. Roy. Krishna (2018): "Concept and Nature of India Democracy- A Theoretical Perspective", Pratidhwani the Echo (A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science), Vol- VI, Issue-III, ISSN: 2278-5264, Pp- 207-224 https://www.thecho.in/files/Krishna-Roy pdf
8. "Democracy Index 2019: A Year of Democratic Setbacks and Popular Protest", London: The Economist Intelligence Unit, 2020, Pp- 6-69, available at hups://www.in.gr/wp-content/uploads/2020/01/Democracy-Index-2019.pdf accessed on December 08/2021
9. available at https://www-thehindu, com/news/national/India-falls-to-53rd-position-in-eius-democracy-index/article33739128.ece accessed on December 09/2021